अतीत की प्रमुख जैन साध्वियाँ

• *प्रवर्त्तक श्री रमेश मुनि*

सुधारस से सराबोर सम्यक् साधना-उपासना की स्रोतस्विनी को अन्तर्मुखी आराधना कहा गया है। सिद्धालय तक पहुँचने का स्पष्ट-स्वच्छ-सरल-सुगम सोपान है। मृत्युंजयी बनने का सबल-उपाय एवं परमात्मा-भाव को प्राप्त करने का उत्तम सत्यथ है।

जिस तरह लोक की अनादिता स्वयं सिद्ध है। उसी तरह साधना महापथ की भी अनादिता अपने आप में सन्निहित है। जिसके लिए शपथ की या किसी उदाहरण देने की आवश्यकता नहीं है। स्वयं तीर्थंकारों की अभिव्यक्ति रही है साधना मार्ग के लिए -

जे के वि गया मोक्खं, जे वि य गच्छंति जे गमिस्संति।
ते सव्वे सामाइय प्वंमावेणं मुणेयव्वं॥

अर्थात् जो साधक भूतकाल में मोक्ष गये हैं। वर्तमान काल में जाते हैं और भविष्य काल में जायेंगे। यह सामायिक साधना का ही प्रभाव है। ऐसा जानना चाहिये। वस्तुतः मुमुक्षु आत्माओं के लिए साधना का मार्ग सदा सर्वदा उपादेय एवं आचरणीय रहा है।

माना कि साधना के मंगल-पथ पर हर राही नहीं चल पाता, न इसका आचरण ही कर पाता है न इसके गूढ़तम (मोक्ष मार्ग) स्वरूप को सुन समझ पाता है और यह भी आवश्यक नहीं कि प्रत्येक नर-नारी साधना में लगे या साधक बने। क्योंकि साधक बनने के लिए योग्यता की महत्वपूर्ण भूमिका का होना जरूरी है। योग्यता के बिना सम्यक् साधना अभीष्ट फलदायिनी नहीं बन पाती है।

यत्किञ्चित आत्माएँ ही ऐसी होती हैं- जिनकी अन्तरात्मा तीव्रतम-काषायी भावों से उपरत हो जाती हैं। वे अपने आप में जग जाती है। उनके सोचने का तरीका अध्यात्म यथ गामी बन जाता है। जैसे -

"मैं आत्मा हूँ। अनादि अस्तित्व वाला हूँ। जड़ से पृथक हूँ। शाश्वत सिद्ध स्वरूप मेरा निज रूप है। मैं भव्य हूँ। भव्यता मेरा स्वभाव है। सामायिक साधना, साम्यत्व आराधना का कर्तव्य परक अंग है। मुझे चरम सिद्धि के लिए उपासना से जुड़ जाना चाहिये।"

इस तरह जिनका चेतना-उपयोग जागृत हो चुका है। शुभाशुभ कर्म-विपाक के जो विज्ञ बन चुके हैं। "पुनरपि जनं पुनरपि मरणं।" के चक्रव्यूह से मुक्त होने की उत्कृष्ट ललक - तमन्ना जिनके अन्तरंग में उछालें भर रही है साथ ही जो सद्बोध से बोधित हो गये हैं। जो संसार की आश्रवमय प्रवृत्ति को विषवत अनुभव करते हैं।

ऐसी आत्माएँ जो उपर्युक्त सम्यक्. तत्व के साथ संलग्न होने को तत्पर है, के भले ही किसी जाति-कुल-परिवार हो, किसी भी मत-पंथ-सम्प्रदाय की, किसी भी देश-प्रांत शहर-गाँव की हो और किसी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भी वेश-परिधान में हो। सभी को समीचीन रूप में रत्नत्रय (मोक्ष मार्ग) साधना की आराधना का अधिकार है। वे जीव स्त्री रूप (लिंग) में हो चाहे पुरुष, बालक, युवक-युवती हों सभी मार्गानुसारी बन सकते हैं। उन्हें इसका अधिकार है। यहाँ यह जरूर निश्चित है कि भव्यता गुण वाला जीव ही सिद्धत्व पायेगा। क्योंकि वे आत्माएँ सम्यक् तत्व बोध रूप मोक्ष मार्ग साधना वीथी का ठीक तरह से श्रद्धान करती है। वाणी द्वारा यथा स्वरूप का प्ररूपण प्रकथन करते हैं। मन-वाक्-काय द्वारा स्पर्शन करते हैं। इसी कारण इन आत्माओं को मोक्षाभिलाषी या मोक्षाभिमुख कहा गया है।

साधना का महापथ न कोई छुई-मुई का पौधा है और न संकीर्ण जटिलता से पार किया जाये ऐसा पथ, न भाई-भतीजावाद के दलदल से लिप्त। साधना का राज-पथ (द्वार) सभी सम्यक् दृष्टि आत्माओं के लिए अतीत में खुला था। वर्तमान में है और भविष्य में खुला रहेगा अनंत काल पर्यंत।

इस संदर्भ में साधना के सुरम्य-सुभव्य उपवन में जिस तरह श्रमण-मुनि संघ रूप वृक्षों का अक्षय भण्डार देदीप्यमान रहा है। उसी तरह श्रमण उपवन संघ शासनोद्यान में श्रमणी-संघ रूप लताएँ भी अपने आप में गरिमा-महिमावान रही है। श्रमणी-समूह का प्रखर इतिहास सत्य - अहिंसा - संयम - शील - समता-सहिष्णुता-तप-त्याग की सौरभ से सुवासित रहा है। तीर्थंकरों द्वारा प्रस्थापित चतुर्विध संघोद्यान को यशस्वी (सुरम्य) बनाने में साध्वी-समाज का अपूर्व योगदान अतीत के अनंत काल से रहा है। आगम निगम के पावन पृष्ठों पर ही नहीं, अपितु जन-जीवन के हृदय पटल पर अमिट रेखा के रूप में अंकित रहा है।

श्रमणी जगत् का साधना मय जीवन जितना उपासना के क्षेत्र में अचल अकम्प रहा है उतना ही परीषहोपसर्ग विजेता भी। जितना स्वयं के लिए जागृत रहा है, उतना ही पर-कल्याण प्रेरक भी। संयम-वैराग्य में जितना अग्रगण्य रहा है उतना ही बहिरंग अंतरंग तप विधि में भी तेजस्वी तपोमय। जितना निर्मल-निर्ममत्व-निरंहकार निर्लेप रहा है उतना ही विनय विवेक आत्म-विज्ञान में उन्नायक ऊर्ध्वमुखी भी। जितना पठन-पाठन से सक्रिय रहा है उतना ही चिंतन मनन-मंथन में तत्पर भी। जितना मृदु-मधुर वृत्तिवाला रहा है षट् काया के लिए उतना ही संयम स्व मर्यादा में कठोर भी। आचार-विचार व्यवहार की पावन गंगा में विशुद्ध होता रहा है, उतना ही ज्ञान-क्रिया का संगम स्थल-तीर्थ स्थल भी और जितना अपने उत्तर- दायित्व और कर्तव्यों के प्रति निर्वाही व कुशल रहा है उतना ही संघ के प्रति समर्पित भी।

वस्तुतः श्रमण संस्कृति के अणु-अणु और कण-कण में जो प्रभाव मुनि-श्रमण संघ का रहा है वैसा ही अद्वितीय अनूठा प्रभाव गौरव श्रमणी जगत का भी बरकरार रहा है। जिनवाणी के प्रचार-प्रसार-प्रभावना में अतीत की महान श्रमणियों का श्लाघनीय योगदान रहा है। विधि-निषेध का कार्य क्षेत्र जो श्रमणों का रहा है वही श्रमणी जगत् का। विविध प्रकार के तप-त्यागमय प्रवृत्ति में साध्वी-समूह ने अद्वितीय कीर्तिमान स्थापित किया है। लोमहर्षक-प्राणघातक परिषह-उपसर्गों के प्रहार जितने श्रमणी जगत् ने सहे हैं। प्राणों की कुर्बानी देकर भी धर्म को बचाया। शील-संयम की रक्षा की ओर इतनी सुदृढ़ रही कि आततायियों को घुटने टेकने पड़े हैं। यहाँ तक कि मनुष्य ही नहीं, पशु-दैविक जगत् भी श्रमणी जीवन (चरणों में) के सम्मुख नत मस्तक हो गया।

भगवान ऋषभदेव के संघ में तप-त्याग की अमर ज्योति स्वरूप प्रमुखा श्रमणी रत्ना ब्राह्मी-सुन्दरी ने अपने कर्तव्यों की बेजोड़ भूमिका निभाई है। वह कार्य-कुशलता किसी अधिकारी साधक-श्रमण के समान ही महत्व पूर्ण रही है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुनिपुंगव बाहुबली आत्म-साधना में लगे हुए थे। अन्तर्मन में मान का गज तूफान मचा रहा था। स्थिर खड़े थे ध्यान मुद्रा में। फिर केवल ज्ञान-दर्शन से दूर थे। भ. ऋषभदेव द्वारा आज्ञापित ब्राह्मी-सुंदरी महाश्रमणी बाहुबली मुनि को प्रबोधित करने आई। बाहुबली मुनि की सेवा में पहुँचकर सविनय निवेदन किया -

आज्ञापयाति तात स्त्वां ज्येष्ठार्य! भगवनिदम्।
हस्ती स्कन्ध रूढानाम् केवलं न उत्पद्यते॥

(त्रिषष्ठी श.च.)

हे ज्येष्ठार्य! भ. ऋषभदेव का सामयिक उपदेश है कि हाथी पर बैठे साधक को केवल ज्ञान-दर्शन की प्राप्ति नहीं होती है।

राजस्थानी भाषा में -

वीरा मारा गज थकी उतरो,
गज चढ़िया केवल न होसी ओ....।

बाहुबली मुनि के कर्ण कुहरों में दोनों श्रमणियों की मधुर हितावही स्वर लहरी पहुँची। तत्काल मुनिवर सावधान होकर चिंतन करने लगे -

"यह स्वर बहिन श्रमणियों का है। इनकी वाणी में भावात्मक यथार्थता है। मैं अभिमान-रूप हाथी पर बैठा हूँ। मस्तक मूंडन जरूर हुआ पर अभी तक मान का मूंडन नहीं किया। मुझे लघुभूत बनना चाहिये। अपने से पूर्व दीक्षित आत्माओं का मैंने अविनय किया है। मैं अपराधी हूँ। मुझे उनके चरणों में जाकर सवन्दन क्षमापना करना चाहिये।"

इस तरह विचारों को क्रियान्वित करने हेतु कदम बढ़ाया। बस देर नहीं लगी। केवल ज्ञान-केवल दर्शन पा लिया बाहुबली मुनि ने। श्रमाणियों द्वारा किया गया श्रमसार्थक हुआ।

साध्वी राजमति अपने शरीर व वस्त्रों का संगोपन कर गंभीर-गर्जना युक्त वाणी से ललकारती हुई बोली-

"हे मुने रथनेमि! इस तरह असंयमी जीवन जीने की कामना के लिए तुम्हें धिक्कार है। इस तरह अपयश पूर्वक जीने की अपेक्षा तुम्हारा मरण श्रेयस्कर है। अगन्धक कुल का सर्प वमन किये हुए विष का पुनः वरण नहीं करता उसी तरह वमन की हुई मुझे तुम स्वीकार करना चाहते हो। तो तुम्हारी गति नदी के किनारे पर खड़े हड़ (एरण्ड) नामक वृक्ष की तरह होगी।"

महाश्रमणी के शिक्षाप्रद ओजस्वी यशस्वी वचन रूप अंकुश से साधक रथनेमि का विकारी मन नियंत्रित हो गया। जैसे-अंकुश लगने पर हाथी वश में होता है।

महाशक्ति -शौर्य-साम्य भाव सम्पन्न सम्राट् श्री कृष्ण वासुदेव की महारानियाँ पद्मावती - गौरी-गान्धारी-लक्ष्मणा सुसीमा-जाम्बवती-सत्यभामा-रूक्मिणी-मूलश्री और मूलदत्ता और भी अनेकों रानियाँ, पुत्रवधुएँ, प्रपौत्र वधुएँ यादव वंश की ज्योत्स्नाएँ दीक्षित होकर श्रमणी-तपस्विनी बनी। कठोर तप-जप आराधना करके निर्वाण को प्राप्त हुई है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भगवान् महावीर के शासन में श्रमणी प्रमुखा, सत्य शील-समता प्राण चन्दनबाला का साधना मय जीवन बाल्यकाल से ही बड़ा संघर्ष पूर्ण रहा है। चतुर्विध संघ के लिए प्रकाश स्तंभ व पल-पल प्रेरक। श्रमणी संघ का महासाध्वी चंदन बाला ने बड़ी विशिष्ट सूझबूझ से सफलता पूर्वक निर्वाह किया एवं आचार-विचार की परम्परा को गतिशील रखा। उत्कृष्ट त्याग-वैराग्य की साक्षात् जीवंत प्रतीक श्रमणी प्रमुखा चन्दनबाला का संयोग पाकर अनेक राजा-महाराजाओं-श्रेष्ठियों-धनपतियों-पुत्रियाँ, पुत्रवधुएँ-मृगावती जयंती जैसी श्रद्धा-शील निष्ठा विद्वद भव्यात्माएँ अपार वैभव शारीरिक सुख-साधनों को तिलांजलि देकर भगवान् महावीर के शासन में भिक्षुणी (श्रमणी) बनकर कृत कृत्य हो गई। तप-जप-साधना में अपने को समर्पित कर एक योद्धा, वीरांगना की भांति मोहकर्म से लोहा लिया। अन्ततः विजयी बन सिद्धत्व को प्राप्त किया।

इसी श्रृंखला में मगधाधिपति सम्राट् श्रेणिक की पट्टरानियाँ काली-सुकाली-महाकाली-कृष्णा -सुकृष्णा-महाकृष्णा- वीरकृष्णा-रामकृष्णा-पितृसेन -महासेन कृष्णा तथा नंदादि तेरह और प्रमुख रानियों ने भी महा श्रमणी चंदनबाला का सुखद सहवास-शरण पाया। अर्हन् प्ररूपित धर्म-दर्शन का आवश्यक अध्ययन पूर्ण कर गुरुणी वर्या चंदनबाला के नेतृत्व में क्रमश : -

रत्नावली तप, कनकावली, लघुसिंह निष्क्रिड़ित, महासिंह निष्क्रिड़ित, सप्त-सप्तमिका, अष्टम-अष्टमिका नवम-नवमिका, दशम-दशमिका, लघुसर्वतोभद्र, महासर्वतोभद्र, मद्रोतर तप, मुक्तावलि स्थापना इस तरह तप साधना क्रम को पूरा किया। भगवान् महावीर के धर्मसाधना संघ को चार चांद लगाये। तपाचार में अपूर्व कीर्तिमान स्थापित किया।

भ. महावीर की माता देवानंदा (जिनकी कुक्षि में भ. की आत्मा बयासी (८२) रात्रि रही) पुत्री तथा बहिन ने भी भगवान के शासन में जैन आर्हती दीक्षा स्वीकार की। तप-जप-संयम-साधना आराधना की गरिमा-महिमा-मंडित पावन परम्परा में वे ज्योतिर्मान साधिकाएँ हो गई।

इसके पश्चात् भी समय-समय पर अनेकानेक संयम-निधि श्रमणियाँ हुई जिन्होंने जिन शासन की महत्ती प्रभावना की।

साधना के क्षेत्र में श्रमणी-संघ वस्तुतः सफल रहा है। कहीं पर भी असफल होकर (बेरंग-चिट्ठी की तरह) नहीं लौटा। अपने आराध्य तीर्थपति-आचार्य-गुरु के साथ ही गुरुणी वर्या के शासन संघ (अनुशासन-आज्ञा) में सदैव समर्पित रहा है श्रमणी संघ। देश कालानुसार अनुकूल-प्रतिकूल परिस्थितियों का प्रतिरोध-प्रतिकार किया है श्रमणी संघ ने, किंतु संघ के प्रति विद्रोह किया हो या प्रतिकूल श्रद्धा-प्ररूपणा स्पर्शना का नारा बुलंद किया हो ऐसा कहीं पर आगम के पृष्ठों पर उल्लेख नहीं मिलता है। हाँ मुनि संघ ने तो कई बार अर्हत्-शासन-संघ के विपरीत आचार-विचार धारा का उपयोग किया है। उन भिक्षु आत्माओं को निह्नव के रूप में पुकारा गया। श्रमणी-संघ ने ऐसा कभी नहीं किया। इस कारण मुनि-संघ की अपेक्षा साध्वी -संघ अधिक विश्वसनीय भूमिका निभाने वाला सिद्ध हुआ है।

यद्यपि संस्याओं की दृष्टि में आज का श्रमणी-संघ उतना विशाल नहीं है। छोटे-छोटे विभागों में विभक्त है। तथापि यह वर्तमान का श्रमणी-समूह महासाध्वी चन्दनबाला का ही शिष्यानुशिष्या परिवार है। क्योंकि श्रमणी नायिका चन्दनबाला थी। देश-कालानुसार भले ही कुछ आचार-संहिता में परिवर्तन हुआ है। फिर भी मूलरूपेण उसी आचार प्रणाली का अनुगामी होकर चल रहा है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कई शताब्दियाँ बीत गई। चन्दनबाला के संघ-शासन में एक से एक जिन धर्म प्रभाविक श्रमणियाँ (वर्तमान दृष्टि से पृथक-पृथक सम्प्रदायों में) हुई। वर्तमान में कुछ वर्षों पूर्व से भी अनेकानेक जिन शासन रश्मियाँ जैन जगत् में विद्यमान है। कोई विद्याध्ययनाध्यापन, पठन-पाठन, लेखन-धर्म प्रवचन करने में दक्ष है। कई सफल लेखिका, तपस्विनी है। कई तपोपूत साध्वियाँ हिंसकों को अहिंसक व व्यसनियों को अव्यसनी बनाने में कटिबद्ध रही है। कई महाभागा श्रमणियों ने धर्म के नाम पर पशु बलियाँ होती थी उसे बन्द करवाई। ऐसे कार्यों में भी वे सदैव तत्पर रही, तथा है।

जैनाचार्य महान आदर्श पूज्य प्रवर जयमल जी भ. की आज्ञानुशासन में विचरने वाली श्रमण संघ में आस्था रखने वाली, मरुधरा मंत्री स्व. स्वामी श्री हजारी मलजी द्वारा दीक्षिता व अध्यात्मयोगिनी महा. श्री कानकुंवर जी म. व उनकी शिष्या श्री चम्पाकुंवर जी म. भी इसी श्रमणी-संघ-श्रृंखला में हो गई। जिनका जीवन तप-त्याग मय रहा है। करीब ६०/४३ वर्ष संयम पर्याय में रहकर व लगभग ८०/६४ वर्ष की वय पर्यंत अनेकों भाषाओं जैनागम-सिद्धान्तों से समन्वित होकर धर्म-संघ शासन, श्रमणसंघ की सेवा की है। समाजोत्थान में जो सदैव अग्रसर रही है। उन्हीं की पावन स्मृति में प्रकाशित होने वाले स्मृति ग्रंथ के प्रति मेरी शुभ कामना।

अतीत की प्रमुख जैन साध्वियाँ महान प्रभाविका रही हैं। वैसे ही वर्तमान में है और भविष्य में भई रहेगीं।

* * * * *

सामायिक

- सामायिक का एक मुहुर्त (४८ मिनट) काल सिर्फ एक व्यावहारिक सीमा है, वास्तव में तो समभाव में जब तक आत्मा स्थिर रहे तब तक सामायिक की जा सकती है।
- समभाव की अनुभूति करना सामायिक है। मन, वचन और कर्म तीनों योगों को समस्थिति में लाना / रखना सामायिक है।
- जिस प्रकार कोई व्यक्ति अपराध करके उसके कटु परिणामों से बचने के लिए ईश्वर की शरण में जाती है। उसकी प्रकार मनुष्य पाप करने के बाद यदि शुद्ध मन से सामायिक की शरण ग्रहण करके (सामायिक - साधना करले) तो पापों से अवश्य ही उसकी मुक्ति (विशुद्धि) हो जाती है।

• **स्व. युवाचार्य श्री मधुकरमुनि**

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org